RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –III GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES

प्रबंधन, व्यवहार, विधि, लेखाकंन एवं अंकेक्षण

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. नियोजन को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः- किसी संगठन में लक्ष्यों व इनकी प्राप्ति के लिए कार्य-पथ का निर्धारण नियोजन कहलाता हैं । इसका आशय पूर्वानुमान, संसाधानों के आंवटन, लक्ष्य निर्धारण व लक्ष्य प्राप्ति की रणनीति संबंधित निर्णयों से हैं ।

2. समता पर व्यापार से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तरः- जब किसी कम्पनी का संचालन स्वामित्व पूँजी की अपेक्षा ऋणपूंजी के आधार पर किया जाता है, तो इस क्रिया को 'समता पर व्यापार' कहा जाता हैं।

3. पदसौपान की कोई दो सीमाएँ बताइये ?

उत्तरः- 1) पदसौपान की लम्बी संचार प्रक्रिया के कारण कार्यों में विलम्ब की संभावना ।

2) पदसौपान के कारण संगठन में कठोर वातावरण के निर्माण की संभावना ।

4. नेतृत्व का महान मानव सिद्धांत क्या हैं ?

उत्तरः- नेतृत्व के महान मानव सिद्धांत के अनुसार नेता जन्मजात होते हैं अर्थात् नेतृत्व के गुणों का अर्जन नहीं किया जा सकता है। उदाहण - हिटलर ।

5. रेखा व सूत्र के मध्य होने वाले कोई दो प्रमुख द्वन्द्व बताइयें ?

उत्तरः- 1) सूत्र के केवल सलाहकारी निकाय, उत्तरदायित्व रेखा प्रबंधक पर होने से सूत्र द्वारा दी गई सलाह में गंभीरता की कमी की संभावना

2) रेखा व सूत्र में वैचारिक भिन्नता व सूत्र द्वारा प्राधिकारों में अतिक्रमण के कारण मतभेद की संभावना ।

6. समता अंशधारी होने के क्या लाभ हैं ?

उत्तरः- समता अंशधारियों को संगठन के निर्णयों में भागीदारी का अधिकार प्राप्त होता हैं ।

- उपक्रम के लाभ के अनुसार आनुपातिक लाभांश की प्राप्ति का अधिकार प्राप्त होता है।

7. कार्यशील पूंजी से क्या आशय हैं ?

उत्तरः- किसी उपक्रम के कुशल संचालन अर्थात दैनिक क्रियाओं के संचालन हेतु आवश्यक पूंजी कार्यशील पूंजी कहलाती है, सामान्यतः वह चालू सम्पत्तियों का चालू दायित्व पर आधिक्य के रूप में होती हैं ।

8. ऋण -समता अनुपात का सूत्र लिखिए ?

उत्तरः- ऋण-समता अनुपात = $\frac{\text{दीर्घकालीन ऋण}}{\text{अंशधारियों का कोष}}$

यहा दीर्घकालिक ऋण = वित्तीय संस्थाओं से ऋण + ऋण पत्र

अंशधारियों का कोष = समता अंश पूंजी + पूर्वाधिका अंश

पूंजीगत संचय + लाभ हानि शेष इत्यादि

9. वित्तीय विवरण विश्लेषण के कोई दो उद्देश्य लिखिए ?

उत्तरः- 1) वर्तमान के वित्तीय परियोजनाओं की कार्यकुशलता के ज्ञान हेतु ।

2) भविष्य की योजनाओं, समन्वय, निर्देशन? नियंत्रण में सहायक, इसी कारण वित्तीय विवरण को किसी उपक्रम की आँखों की संज्ञा दी गई ।

10. लिंग आधारित बजट को समझाइये ?

उत्तरः- लिंग आधारित बजट एक ऐसी व्यवस्था हैं जिसमें बजट निर्माता किसी परियोजना का इस प्रकार वित्तीय आवंटन करता है कि परियोजना का आधार लाभ महिलाओं तक पहुचें।

11. ऑलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व क्या हैं ?

उत्तरः- व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक अवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ व्यक्ति का अपूर्व समोजन करता हैं।

12. सामाजिक बुद्धि को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः- हॉर्नडाइक के अनुसार सामाजिक बुद्धि वह सामान्य मानसिक क्षमता है जिससे एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को समझता है उनके साथ कुशलता से व्यवहार करता है व अच्छे सामाजिक संबंध बनाकर सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करता हैं ।

13. एटकिन्सन एव शिफरिंग के अनुसार स्मृति कितने प्रकार की होती है ?

उत्तरः- 1) सांवेदिक स्मृति- इन्द्रिय स्तर पर प्राप्त सूचनाएं।
2) अल्पकालिक स्मृति- कम समयावधि तक याद रहने वाली सूचनाएं।
3) दीर्घकालिक स्मृति- अपेक्षाकृत स्थायी स्मृति।

14. चिन्ता की परिभाषा लिखिए ?

उत्तरः- चिन्ता एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो सामान्यतः सभी व्यक्तियों में भिन्न स्तर पर पायी जाती है। इसका आशय भय व आशंका की सामान्यीकृत अनुभूति से है।

15. उद्देश्यानुसार प्रबंध से क्या आशय है?

उत्तरः- पीटर ड्रकर द्वारा प्रतिपादित अवधारणा जिसके तहत किसी संगठन के उद्देश्यों को परिभाषित करने की प्रक्रिया में अधीनस्थों को अभिप्रेरित व स्वअनुशासित करने के उद्देश्य से सम्मिलित किया जाता है।

16. ऑस्टिन के अनुसार स्वामित्व (Ownership) क्या है ?

उत्तरः-ऑस्टिन के अनुसार स्वामित्व किसी निश्चित वस्तु पर ऐसा अधिकार है जो उपयोग की दृष्टि से अनिश्चित, व्ययन की दृष्टि से अनिर्बन्धित एवं अवधि की दृष्टि से असीमित है।

17. मूर्त व अमूर्त कब्जा किसे कहते है ?

उत्तरः-किसी भौतिक वस्तु पर आधिपत्य मूर्त कब्जा एवं ऐसी सम्पदाओं पर कब्जा जिन्हें ज्ञानेन्द्रियों से अनुभूत न किया जा सके अमूर्त कब्जा कहलाता है ।

18. कृत्रिम व्यक्ति से क्या आशय है ? उदाहरण दीजिए।

उत्तरः-कृत्रिम व्यक्ति विधि द्वारा निर्मित ईकाई है जिस पर विधि अधिकार एवं कर्तव्य आरोपित करती है इन्हें विधिक व्यक्ति भी कहा जाता है। उदाहरण- निगम, संस्था।

19. सूचना प्रौघोगिकी की धारा 66(ए) किस सन्दर्भ में विवादित है ?

उत्तरः- आई.टी. अधिनियम की धारा 66(ए) सोशल मिडिया पर नफरत फैलाने वाले व अपमानजनक भाषण के विरूद्ध कार्यवाही के सन्दर्भ में इसके दुरूपयोग के कारण विवादित रही व उच्चतम न्यायालय ने इसे मनमानी का आधार बताकर रद्द कर दिया।

20. घरेलू हिंसा अधिनियम के अनुसार बालक की परिभाषा दीजिए।

उत्तरः- बालक से अभिप्राय 18 वर्ष की कम आयु के व्यक्ति से है जो स्वंय का/दत्तक ग्रहित/सौतेला अथवा पोषणीय बालक हो।

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 5 अंक निर्धारित है।

21. ''समन्वय प्रबन्धन का हृदय है।'' टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः-समन्वय संगठन का प्राथमिक सिद्धान्त है, समन्वय द्वारा संगठन की विभिन्न क्रियाओं में एकता स्थापित कर लक्ष्य की ओर उन्मुख किया जाता है। समन्वय से संगठन में एकीकृत विचारधारा उत्पन्न होती है व सहयोग की भावना का संचार होता है। संगठन में गतिशीलता व स्वस्थ वातावरण बनाये रखने में समन्वय महत्वपुर्ण है। कार्यों में दोहराव से बचाव कर समन्वय संगठन की कार्यकुशलता में वृद्धि करता है। इस प्रकार समन्वय प्रबन्धन का हृदय है।

22. धन के अधीकतमीकरण की अवधारणा का वर्णन कीजिए ?

उत्तरः- धन के अधिकतमीकरण से तात्पर्य अंशधारियों की परि-सम्पतियों में वृद्धि करने से है, अन्य शब्दों में इसे संस्था के शुद्ध वर्तमान मूल्य में वृद्धि करने की अवधारणा कहा जा सकता है। इसके अनुसार वित्तीय प्रबंधक को उन विकल्पों का चुनाव करना चाहिए जिससे संस्था को दीर्घकालीन स्थायित्व प्राप्त हो। यह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें संस्था की साख, छवि,

बौद्धिक संपदा जैसे तत्व स्वतः अन्तर्निहित हो जाते है। धन के अधिकतमीकरण हेतु दीर्घकालीन लाभ को सुनिश्चित करने के क्रम में अल्पकालीन हित त्यागे जा सकते हैं ।

23. विपणन की परम्परागत व आधुनिक अवधारणा में अंतर बताइए।

उत्तरः-

परम्परागत अवधारणा	आधुनिक अवधारणा
1) सीमित अवधारणा	1) व्यापक अवधारणा
2) विपणन- ऐसी निष्पादन की गतिविधि जिसमें उत्पादक वस्तुओं व सेवाओं को प्रत्यक्षतः उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जावे।	2) विपणन की क्रियाएं ग्राहक की आवश्यकता व ग्राहक संतुष्टि की ओर उन्मुख अर्थात उत्पाद को ग्राहक की आवश्यकतानुरूप बनाने पर बल।
3) विस्तृत विश्लेषण व अध्ययन की आवश्यकता नहीं	3) मार्केट रिसर्च की महत्ता (बाजार शोध)
4)कंपनी आधारित विचारधारा	4) ग्राहक आधारित विचारधारा
5)केवल उत्पाद पर बल, समग्रता नहीं	5)सामाजिक पक्ष भी सम्मिलित, अधिक समग्र रूप।

24. नेतृत्व का जीवन चक्र सिद्धांत बताओं।

उत्तरः- पॉल हर्से व ब्लेचर्ड द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत जीवन चक्र सिद्धांत है जिसमें कर्मचारी केन्द्रित नेतृत्व, कार्यकेन्द्रित नेतृत्व एव अधिनस्थों की परिपक्वता के आधार पर नेतृत्व की चार शैलिया बताई-

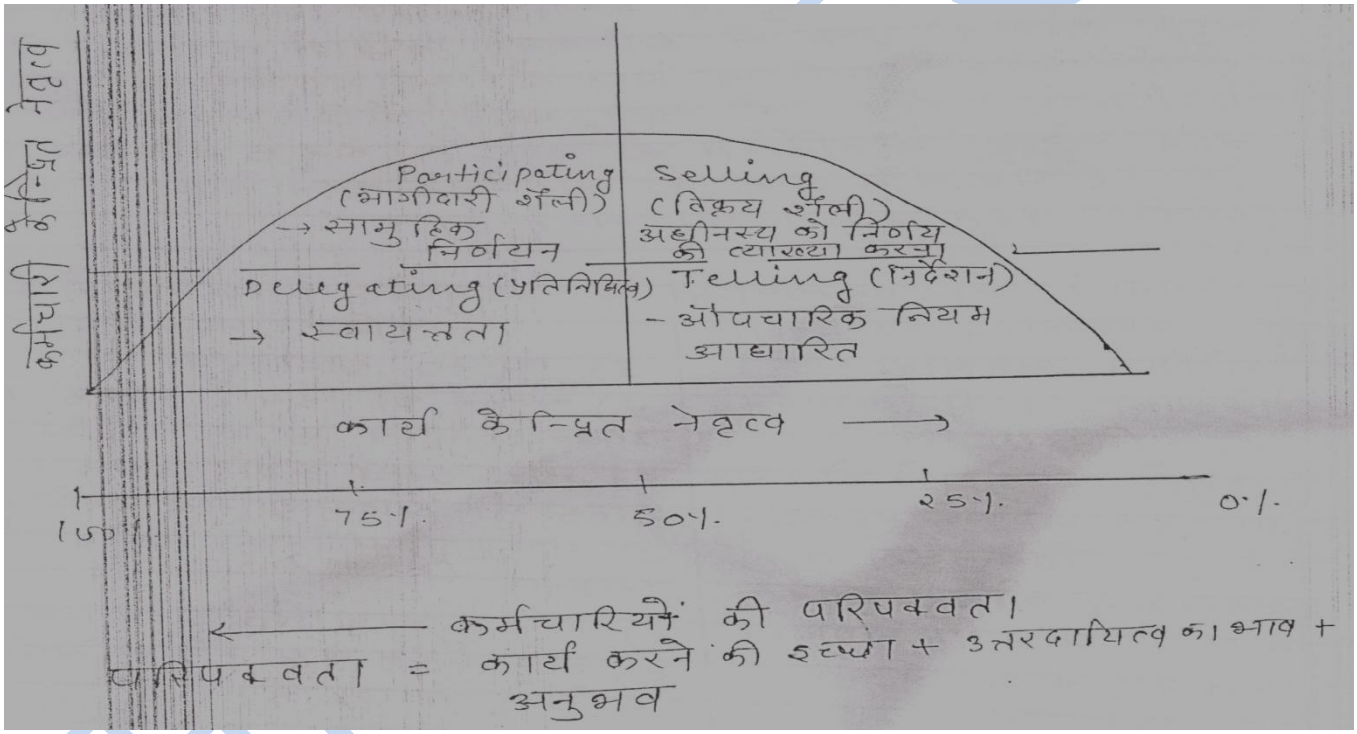

25. भर्ती के विभिन्न चरण बताओं।

उत्तरः- 1.पदों की मांग → 2.शैक्षणिक व अन्य शर्तों का निर्धारण- → 3. आवेदन का विवरण ↓ 4.योग्यता व क्षमता निर्धारण हेतु परीक्षा ↓ 5.दस्तावेज व पुलिस प्रमाणीकरण ↓ 6.सर्वोत्तम का चयन → 7.सेवा शर्तों व नियुक्ति पत्र → 8.परिवीक्षा काल ↑ 9.विभाग में स्थापना ↑ 10.अभिमुखन प्रशिक्षण

26. जीरो आधारित बजट की अवधारणा समझाइये।

उत्तरः- टेक्सास इन्सट्रुमेंट नामक कंपनी में सर्वप्रथम लागू व पीटर पीहर द्वारा प्रतिपादित अवधारण लागु शून्य आधारित बजट है, जिसमें बजट निर्माता पहले से चले आ रहे कार्यक्रमों, परियोजनाओं को शून्य कर देता है व वर्तमान परिस्थिती के अनुरूप कार्यक्रम/परियोजनाओं का चयन व नियोजन करता है। इस प्रकार इस बजट में मद पूर्णत वर्तमान के अनुमान पर आधारित होता है व खर्च के औचित्य को पहले विश्लेषित किया जाता है। अतः यह बजट अधिक कार्यकुशल व मितव्ययी होता है।

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक निर्धारित है।

27. किसी संस्था में कार्यशील पूंजी की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर 1) दैनिक कार्य अविलम्ब करने हेतु आवश्यक।
2) कम्पनी की ऋण क्षमता व साख में वृद्धि हेतु।
3) कम्पनी की कार्यकुशलता में वृद्धि की दृष्टि से आवश्यक।
4)आकर्षक लाभांश व अंशों के मूल्य में स्थिरता बनाए रखने हेतु।
5) भुगतान में सुविधा व नकद छूट का लाभ लेने के लिए।
6) अनुकूल अवसरों का लाभ उठाने के लिए आवश्यक।

28. आंतरिक नियंत्रण से आप क्या समझते है?

उत्तरः- आंतरिक नियंत्रण के अन्तर्गत वे सभी उपाय आते है जिनके द्वारा व्यवसाय के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित किया जाता है। इसका उद्देश्य संस्था में व्यवहारों का सही लेखा सुनिश्चित करना, गलती व गबन को रोकना, उत्तरदायित्व निर्धारण, विचरणों का पता लगाने व कुशलता व निष्पत्ति में सुधार करना है। इसके मुख्यतः दो तत्व हैः

(1) आंतरिक निरीक्षण, लेखा कार्य को अलग-अलग खण्डो विभाजित कर दिया जाता है व प्रत्येक खण्ड का लेख एक अलग व्यक्ति (प्रतिसंतुलन) करता है।	(2) आंतरिक अंकेक्षण, व्यवसायिक संस्था के लेखे व क्रियाओं का पुनर्निरीक्षण, व्यवसाय के ही किसी नियुक्त कर्मचारी द्वारा किया जाता है।

29. भारत में सामाजिक लेखा परीक्षण पर टिप्पणी लिखिए ?

उत्तरः- भारत में निजी क्षेत्र में प्रथम बार ISCO द्वारा सामाजिक लेखा परीक्षण किया गया। सरकारी क्षैत्र में 1980 से कन्सेट कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड जैसी कम्पनियों से प्रारम्भ हुआ। अशोक मेहता समिति के लोक क्षेत्र में ' सामाजिक लेखा' पद्वति के सुझाव पर इस दिशा में प्रगति हुई है। 73 वे व 74 वे संविधान संशोधन में ग्राम सभा की संकल्पना अपनाई गई व ग्राम सभा को पंचायत समिति बजट, हितभोगी निर्धारण, परियोजनाओं की जांच, किसी सरकारी अधिकारी को समन व लोकनीति के मूल्यांकन जैसी शक्तियां प्रदान कर सामाजिक लेखा परीक्षा की क्षमता में अभिवृद्वि की।

30. वित्तीय विवरण विश्लेषण की कोई दो तकनीकें लिखिए।

उत्तरः-1. सम विच्छेद विश्लेषणः- स्थायी लागत व परिवर्तनशील लागत के मध्य लागत-लाभ विश्लेषण कर विक्रय की ऐसी मात्रा ज्ञात की जाती है जहां न लाभ न हानि हो, अर्थात इस बिन्दू से उपर लाभ व इस बिन्दू से कम विक्रय पर हानि होती है।

2. आपुपातिक विश्लेषणः- किसी उपक्रम की स्थिति के ज्ञान हेतु विभिन्न अनुपात जैसे तरलता अनुपात इत्यादि की गणना की जाती है।

31. सांस्कृतिक बुद्वि का प्रशासन में क्या उपयोग है ?

उत्तरः- सांस्कृतिक बुद्वि में सभ्यता/संस्कृति को गहराई से समझने, सांसकृतिक गतिविधियों को संरक्षित रखने की क्षमताएं सम्मिलित है। अतः सांस्कृतिक बुद्वि युक्त प्रशासक अपने कार्य-क्षेत्र की संस्कृति के अनुरूप सांगठनिक कार्ययोजनाओं व वातावरण का निर्माण करने में समर्थ होगा। इसके समुचित उपयोग से क्षेत्र की विभिन्न संस्कृतियों में अन्तर्विरोध को कम कर समन्वयकारी वातावरण को सुनिश्चित किया जा सकता है। इसके माध्यम से प्रशासक जनता के अनुकूल व अधिक प्रभावी संचार माध्यम का प्रयोग कर नियमों व अभियानों के प्रति जनता को अधिक प्रोत्साहित कर सकता है।

32. **व्यक्तित्व मापन में प्रक्षेपी तकनीकों का क्या महत्व है ?**

उत्तरः-व्यक्तित्व मापन के क्रम में कभी-कभी व्यक्ति स्पष्ट रूप से स्वंय के बारे में बताने, अपनी निजी भावनाओं, विचारों, अभिप्रेरणाओं को व्यक्त करने में हिचकिचाते है। ऐसा होने पर व्यक्ति अपनी छवि निर्माण हेतु सामाजिक दृष्टि से वांछनीय उत्तर दे सकता हैं। व्यक्तिगत मापन की इस त्रुटि से बचने हेतु प्रक्षेपी तकनीको का प्रयोग किया जाता है जो

व्यक्ति की परिकल्पना पर आधारित है व अस्पष्ट उद्दीपक की व्यक्ति द्वारा व्याख्या के माध्यम से अप्रत्यक्ष विधि से व्यक्तित्व मापन में सक्षम है। उदाहरण- रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण, वाक्य पूर्ति परीक्षण इत्यादि।

33. सकारात्मक स्वास्थय प्राप्ति हेतु क्या-क्या उपाया किये जा सकते है ?

उत्तरः-

- सकारात्मक स्वास्थय प्राप्ति हेतु नियमित दिनचर्या का अनुसरण करना।
- समय प्रबन्धन करना एवं कार्यो की प्राथमिकता तय करना।
- योग (प्राणायम, आसन, ध्यान इत्यादि) को दिनचर्या में सम्मिलित करना।
- नियमित व्यायाम करना, जैसे-साइकिल चलाना, तैरना इत्यादि।
- संतुलित आहार ग्रहण करना एवं सकारात्मक अभिरूचियों का विकास करना।

34. एल्डल्फर का ERG सिद्वान्त क्या है ?

उत्तरः- एल्डलफर ने ERG में इच्छाओं को अस्तित्व, संबंध व विकास की श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। एल्डफर के अनुसार आवश्यकताओं का कोई पदसौपानिक क्रम नहीं होता है, किसी भी स्तर पर कोई भी इच्छा जाग्रत हो सकती है।

1. अस्तित्व संबंधी आवश्यकताएं- शारीरिक व जीवित रहने हेतु अन्य आवश्यकताएं।

2. संबंध आवश्यकताएं- मनुष्यों में समूह व अन्तः संबंधो की आवश्यकताएं।

3. विकास की आवश्यकताएं- अभिरूचियों, व्यक्तित्व व स्तर के विकास संबंधी आवश्यकताएं।

35. मनोविश्लेषणवाद को समझाइये ?

उत्तरः- सिगमण्ड फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषणवाद सिद्वांत के अनुसार मानव व्यहवार का एक बड़ा भाग अचेतन मन की अभिप्रेरणाओं द्वारा निर्धारित होता है। फ्रायड ने मन के तीन भाग बताए - चेतन, अर्द्धचेतन व अवचेतन। मनोविश्लेषण मन तथा व्यक्तित्व के अचेतनात्मक कार्य संपादन का विज्ञान है, अतः अचेतन मन की समस्या को चेतन मन में लाकर समाधान करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त फ्रायड ने तीन मानसिक रूपों इदं, अहम् व परम अहम् का भी विश्लेषण किया।

36. सूचना के अधिकार अधिनियम के मुख्य दोष क्या है ?

उत्तरः-1. डिजीटलाइजेशन न होने से सूचना एकत्र करने में अत्यधिक विलम्ब एवं अनावश्यक व्यय होता है।

2. जागरूकता के अभाव से प्रक्रियात्मक शुल्क अत्यधिक बताकर इसके प्रयोग को हतोत्साहित करने का प्रचलन है।

3. जनसम्पर्क अधिकारियों में संवेदनशीलता की कमी।

4. सूचना को बौद्विक सम्पदा अथवा अधिकार क्षैत्र से बाहर बताकर टालने की प्रवृति।

5. सूचना के अधिकार, कार्यकर्ताओं की सुरक्षा के अभाव में जानलेवा हमले।

6. उपयोग सीमित, अब तक अधिकांशतः नागरिक समाज अथवा सेलिब्रिटिज द्वारा।

37. पॉक्सो अधिनियम को बालकोन्मुखी बनाने हेतु क्या-क्या प्रावधान किये गये ?

उत्तरः- 1. पॉक्सो अधिनियम में यौन अपराधों को व्यापक रूप में परिभाषित किया।

2. न्यायिक प्रक्रिया बच्चों के अनुकूल बनाई गई- बालक का कथन अभिलेखन व चिकित्सीय परीक्षण विश्वसनीय व्यक्ति या माता-पिता की उपस्थिति में ही किया जाएगा, घर से भी गवाही संभव, पुलिस का वर्दी में होना आवश्यक नहीं, बालिकाओं के लिए महिला पुलिस व महिला चिकित्सक का प्रावधान किया गया है।

3. बच्चे की निजता सुरक्षित की गई। इस हेतु बालक की पहचान सार्वजनिक करने पर मीडिया को 6 माह से 1 वर्ष की सजा सुनिश्चित की व सुनवाई बंद कमरे में होगी।

4. बच्चे की देखभाल व पुर्नवास हेतु प्रावधान।

5. अपराध की रिपोर्ट दर्ज करवाना अनिवार्य एवं त्वरित न्याय(1 वर्ष) का प्रावधान (पॉक्सो ऑनलाइन बॉक्स)

38. कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम का समालोचनात्मक परीक्षण करें।

उत्तरः-

सकारात्मक पक्ष	नकारात्मक पक्ष
❖ यौन अपराधों में कमी	❖ समितियों के गठन की लागत अधिक
❖ महिला सुरक्षा व लैगिंक समानता में वृद्धि	❖ गलत शिकायत पर कार्यवाही के डर के कारण वास्तविक शिकायत का भी हतोत्साहन
❖ समिति में महिला सदस्यों के होने से शिकायतकर्ता को सहजता।	❖ लिखित शिकायत व शिकायत की सीमित अवधि
❖ अधिनियम का दुरूप्योग रोकने हेतु प्रावधान किए गये।	❖ केवल महिलाओं का संरक्षण
❖ लिखित अनुग्रह पर महिला का स्थानान्तरण संभव, अतः महिला सुरक्षा सुनिश्चित।	❖ जिला स्तरीय व खण्ड स्तरीय समितियों में क्षेत्राधिकार स्पष्ट नहीं।
❖ त्वरित न्याय की व्यवस्था।	❖ संरक्षण अधिकारी पर कार्यभार अधिक

39. बाल श्रम निषेध अधिनियम किस प्रकार धारणीय विकास की लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है ?

उत्तरः- बाल श्रम अधियिम 14 वर्ष से कम आयु के बालकों का व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्य करने का निषेध करता है। इसी प्रकार 14 से 18 वर्ष की आयु के बालक खतरनाक उघोगों में कार्य नहीं कर सकते। अतः यह कहा जा सकता है कि यह अधिनियम बालकों व किशोंरो को समग्र व्यक्तित्व विकास को बाधित करने वाले तत्वों को निषेध करता है। बच्चों व किशोरों की सुरक्षा उपलब्ध करवाते हुए यह अधिनियम गरीब वर्ग से संबंधित बालकों के शिक्षा, स्वास्थ्य, व खेल जैसे बुनियादी अधिकारों से वंचित किये जाने की संभावना को कम करता है। इस प्रकार यह धारणीय लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है।